ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 30 कुल पृष्ठ-8 15 से 21 मार्च, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 चैकु-14

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी के 81वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित

11वाँ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न

13 दिन तक चले महायज्ञ में हजारों लोगों ने कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता व धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध आहुति डालकर लिया संकल्प

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

11वाँ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सफलता के साथ सम्पन्न

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध चलाये जा रहे आन्दोलन में तन–मन–धन से सहयोग करे जनता
– स्वामी आर्यवेश

शराबबन्दी की राष्ट्रीय नीति घोषित करे केन्द्र सरकार
– स्वामी रामवेश

आर्य समाज द्वारा चलाया जा रहा बेटी बचाओ अभियान समाज में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
– सांसद शादीलाल बत्रा

मानसिकता बदलने से ही बदलेगा समाज
– प्रतिभा सुमन

गरीब बच्चों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाये
– प्रो. श्योताज सिंह

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन द्वारा आयोजित 13 दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ रविवार 11 मार्च, 2018 को सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर हजारों लोगों ने आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता एवं धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लिया। यज्ञ की पूर्णाहुति पर यजमान परिवारों को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। साथ ही जिन महानुभावों ने यज्ञ में अपना सकारात्मक योगदान दिया उन्हें भी प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आयोजित स्वामी इन्द्रवेश जन्मोत्सव एवं आर्य सम्मेलन में मुख्य अतिथि श्री शादीलाल बत्रा, सांसद राजयसभा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री बलराज कुण्डू, चेयरमैन जिला परिषद् रोहतक, प्रो. श्योताज सिंह, महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा, श्री बिरजानन्द महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री अनिल आर्य अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री धर्मपाल सिंह एडवोकेट चिड़ावा, राजस्थान, ब्र. रामस्वरूप सफीदों, हरियाणा महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती प्रतिभा सुमन, रोहतक नगर निगम के कमिश्नर श्री प्रदीप डागर, जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती शांति जून आदि विशिष्ट अतिथियों ने स्वामी इन्द्रवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के लिए आर्य समाज की प्रशस्ति की।

इस अवसर पर श्री शादीलाल बत्रा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आर्य समाज द्वारा चलाया जा रहा 'बेटी बचाओ अभियान' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और इसका हम सबको समर्थन और सहयोग करना चाहिए। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने स्वामी इन्द्रवेश जी को आर्य समाज का महान योद्धा बताया। जिन्होंने आर्य राष्ट्र के निर्माण के लिए आर्य समाज के राजनैतिक पक्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी ही ऐसे तपस्वी संन्यासी थे जिन्होंने सैकड़ों नव–युवकों को आर्य समाज का कार्य करने के लिए जीवनदानी बनाया। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी ने कहा कि देश में आज भी बच्चे शिक्षा से वंचित हैं, उन्हें शिक्षा दिलवाने के लिए युद्ध स्तर पर अभियान चलाया जाना चाहिए। श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा कि युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए मई–जून मास में शिविरों का आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर वैद्य सत्य प्रकाश आर्य ने कहा कि अंग्रेजी दवाई और अंग्रेजी संस्कृति देश के लिए खतरनाक है। श्री बलराज कुण्डू ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यदि सभी लोग महर्षि दयानन्द जी की नीतियों पर चलने लगें तो बहनों व बेटियों का असुरक्षा का खतरा समाप्त हो जायेगा। उन्होंने कहा कि बेटियों की सुरक्षा एवं उनकी पढ़ाई के लिए वे हर स्तर पर सहयोग करने के लिए कृत–संकल्प हैं। ब्र. रामस्वरूप आर्य ने स्वामी इन्द्रवेश जी को स्मरण करके प्रतिवर्ष कम से कम 11 संन्यासी बनाने का प्रस्ताव रखा। डॉ. अनिल आर्य ने सामाजिक कुरीतियों से लड़ने के लिए युवाओं को तैयार करने पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ. रवि प्रकाश आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और वैदिक साइन्स वर्तमान में भी उतनी ही प्रासंगिक है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से मुझे आर्य समाज का कार्य करने की दिशा मिली और उसी का यह परिणाम है कि आज मैं संन्यासी के रूप में कार्य कर रहा हूँ। स्वामी जी ने जनता का आह्वान किया कि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन में तन–मन–धन से सहयोग करें। उन्होंने भावी कार्यक्रम की घोषणा करते हुए बताया कि आगामी जून मास में युवकों एवं युवतियों के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जायेंगे। 1 से 5 जून, 2018 तक 500 युवकों का शिविर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में तथा 6 जून से 12 जून, 2018 तक युवतियों के विशाल शिविर लगाये जायेंगे। इसी प्रकार विभिन्न प्रदेशों में प्रान्तीय एवं जिला स्तर पर शिविर आयोजित किये जायेंगे। 12 जून, 2018 को स्वामी इन्द्रवेश जी की पुण्यतिथि के अवसर पर विशाल संकल्प समारोह स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में आयोजित होगा। जिसमें संन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

विभिन्न अवसरों पर आर्य समाज के संन्यासी, विद्वान् तथा आर्यनेताओं ने निम्न प्रकार सम्बोधित किया। राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित डॉ सुदर्शन पुनिया ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देने पर भी जोर डालना चाहिए। संस्कारी विद्यार्थी ही समाज के नवनिर्माण में योगदान दे सकता है। हमें बच्चे को भौतिकवाद की मशीन का पुर्जा नहीं बल्की मानवता की भावना को संजोए रखने वाला मानव भी बनाना है। आर्य समाज की विदुषी व भजोनोपदेशिक कल्याणी आर्या ने कहा कि बच्चों के निर्माण की जिम्मेदारी सबसे ज्यादा एक शिक्षक के ऊपर रहती है। इसलिए शिक्षक को अपनी इस जिम्मेदारी को और ज्यादा समर्पण के साथ निभाने की आवश्यकता है। हालांकि यह कार्य बहुत कठिन है क्योंकि विद्यार्थी सिर्फ 6 घंटे शिक्षक के पास रहते हैं और 18 घंटे उन्हें समाज के दूषित वातावरण में व्यतीत करने पड़ते हैं। ऐसे विकट परिस्थितियों में एक शिक्षक की भूमिका अहम हो जाती है। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रांतीय कार्यकारी प्रधान सज्जन राठी जी ने कहा की शिक्षकों के साथ मिलकर कन्या भ्रूण हत्या व नशाखोरी के विरुद्ध जागरूकता का कार्य अब तेज किया जायेगा। कार्यक्रम का सञ्चालन प्रदीप कुमार व हरपाल आर्य ने किया।

महायज्ञ में उतर प्रदेश के आशु कवि योगेश समदर्शी ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी व अंधविस्वास के विरूद्ध जागरूकता पैदा की।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा की बेटियाँ नारे बदलने से नही मानसिकता बदलने से बचेंगी। आज बेटियों के नाम पर विभिन्न नारे बोले जा रहें हैं लेकिन उसके बावजूद भी लड़कियों के प्रति विकृत मानसिकता कम नही हुई। आज भी लड़की को दूसरे दर्जे का माना जाता है, आज भी छेड़छाड़ की घटना, दहेज उत्पीड़न आदि घटना आम बात है। इस से समाज की दोहरी मानसिकता का पता चलता है। जिस दिन समाज में लड़कियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बन जायेगा उसी दिन से समाज में एक नव परिवर्तन आएगा। उसी का प्रयास होना चाहिए। आर्य समाज केवल लिंगानुपात के आंकड़े सुधारने के लिए नहीं बल्कि लड़कियों के प्रति मानसिकता बदलने के लिए कार्य कर रहा है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि समाज में सबसे ज्यादा जरुरत आज युवाओं के निर्माण की है। लेकिन दुर्भाग्य है कि कोई भी राजनैतिक व सामाजिक दल इस ओर प्रयास नही कर रहा।

अगले पृष्ठ पर जारी है

पिछले पृष्ठ का शेष

युवा निर्माण अभियान पर ताकत लगायेगा आर्य समाज

– बिरजानन्द एडवोकेट

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष के लिए आगे आयें युवा

– डॉ. अनिल आर्य

मेरा पूरा जीवन ऋषि दयानन्द सरस्वती जी को समर्पित – स्वामी नित्यानन्द

शिक्षा के साथ संस्कारों पर भी दिया जाये जोर – डॉ. सुदर्शन पुनिया

आर्य समाज ने युवाओं के निर्माण की पहल की हुई है जिसमे सभी को सहयोग करना चाहिए।

स्वामी रामवेश ने कहा कि आज नशा बड़ी तेजी से समाज मे फैल रहा है, जिसके कारण समाज का ताना बाना टूट रहा है। नशे के कारण जहां घर मे झगड़े होते हैं वहीं समाज मे आये दिन छेड़छाड़, बलात्कार आदि की घटनाओं से लेकर सड़क दुर्घटनाओं तक मे नशा की सबसे ज्यादा भूमिका है। इसलिए देश के हुक्मरानों को नशे को पूर्ण प्रतिबंध करने के लिए आगे आना चाहिए।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर आयोजित महिला दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में कहे। उन्होंने कहा कि जो छोटी बच्ची अभी गर्भ में है ओर भविष्य में जो खुद माँ बनकर प्रकृति की प्रक्रिया का हिस्सा बनेगी, उसे गर्भ में ही काट छांट कर गंदे नाले में फेंक दिया जाता है। गऊ के साथ भी माँ शब्द जुड़ता है, वो भी आज बूचड़खानों में कट रही है। हमारे देश को भी भारत माता कहा जाता है,लेकिन भारत माता भी आज समाज में भ्रष्टाचार, नशाखोरी, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, बलात्कार, अपहरण, शोषण व भुखमरी जैसी बुराइयों से त्रस्त है। इसलिए आज समाज में माँ के अस्तित्व को बचाने के लिए समाज के हर वर्ग को ताकत लगानी चाहिए।

महिला आयोग हरियाणा की अध्यक्ष प्रतिभा सुमन ने कहा कि जब तक लोग अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे, समाज भी नहीं बदल सकता क्योंकि समाज तो नाम ही लोगों के समूह का है। इसलिए अच्छे समाज की नीव अच्छी मानसिकता पर ही टिकी हुई है।

रोहतक नगर निगम के कमिश्नर प्रदीप डागर ने कहा कि इस तरह के आयोजन गावँ स्तर तक आयोजित होने चाहिए ताकि नोजवानों को नशे से बचाया जा सके। बहनों में मां के पेट मे मरने से बचाया जा सके।

पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी श्रीमती जयवंती श्योकंद ने कहा कि महिला दिवस मनाना तभी सार्थक है जब हम अपने समाज में महिला को सम्मान व स्वाभिमान से जीने का अधिकार देते हैं। महिला दिवस पर उन्होंने संकल्प लेने लिए कहा कि हमें अपने अधिकारों के लिए लंबी लड़ाई लड़नी है, परन्तु देश व समाज के प्रति हमारे जो कर्तव्य हैं उनको भी भूलना नहीं है। क्योंकि समाज के नव निर्माण की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हमारे ऊपर है।

वैदिक विद्वान दयानंद शास्त्री ने कहा कि वेद में बताया गया है कि परमात्मा की कोई आकृति नही होती। मन्त्र आता है– 'न तस्य प्रतिमा अस्ति।' उसकी कोई प्रतिमा नही है। विरक्त मंडल के संगठन मंत्री स्वामी सोम्यानन्द ने कहा कि वेद का मंत्र 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' हमे सब प्राणियों के प्रति मित्र भाव से व्यवहार की प्रेरणा देता है। स्वामी ब्रह्मानंद ने कहा कि एक मंत्र 'सर्वा आशा मम् मित्रं भवन्तु' से सब दिशाओं में मित्र ही मित्र होने की कामना की गई है। स्वामी शांतानंद ने कहा कि परमात्मा हमें दुख नही देता, दुख तो हमारे बुरे कर्मो का फल है। स्वामी निर्भयानंद ने कहा कि काम, क्रोध, मोह, लोभ व अहंकार की राख हमे परमात्मा से मिलने से रोकती है। स्वामी धर्मानंद, कौंकेरा ने कहा ईश्वर के नाम पर दुनिया मे झगड़े इसलिए हैं क्योंकि वे वेद को भूल गए। जिस दिन वेद अनुसार चल पड़ेंगे। उसी दिन से परमात्मा व धर्म के नाम पर झगड़े बन्द हो जाएंगे।

आगामी 6 से 8 जुलाई, 2018 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 'अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन' हरिद्वार में आयोजित होगा जिसमें देश–विदेश के गुरुकुलों के आचार्य तथा ब्रह्मचारी एवं भारी संख्या में आर्यजनता भाग लेगी।

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के मालिक आचार्य वेदव्रत शास्त्री को सम्मानित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी नित्यानन्द जी, विवेकानन्द शास्त्री तथा ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

इस 13 दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ 27 फरवरी, 2018 को आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महराज के ब्रह्मत्व में हुआ। प्रातः 8 से 11 बजे तक तथा सायं 3 से 6 बजे तक प्रतिदिन वेद पाठ के द्वारा आहुतियाँ अर्पित करने का क्रम निरन्तर चलता रहा। लगभग 2 लाख आहुतियाँ यज्ञ में प्रदान की गई। इस यज्ञ के मुख्य यजमान पद को आश्रम के विशिष्ट सहयोगी श्री राजबीर वशिष्ठ ने सुशोभित किया। उनके अतिरिक्त सर्वश्री डॉ. रणवीर सिंह खासा एवं श्रीमती सुनीता खासा, श्री रामकिशन जिन्दल एवं श्रीमती कमलेश जिन्दल, श्री योगेन्द्र पाल बोहरा एवं श्रीमती शकुन्तला बोहरा यज्ञ में यजमान के रूप में सहयोगी रहे।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के दौरान 7 मार्च, 2018 को महिला सम्मेलन, 9 मार्च को वेद एवं शिक्षा सम्मेलन, 10 मार्च को युवा सम्मेलन तथा 11 मार्च को आर्य सम्मेलन आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में स्वामी रामवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री विजयवेश जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी अलीगढ़, स्वामी सुकर्मानन्द जी अमरोहा, स्वामी निर्भयानन्द जी अलीगढ़, स्वामी शान्तानन्द जी गंगीरी, स्वामी प्रकाशानन्द बेरी, स्वामी धर्मानन्द मथुरा, स्वामी ब्रह्मानन्द जी आदि संन्यासियों के अतिरिक्त प्रसिद्ध समाजसेवी श्री मनमोहन गोयल, श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द, श्री मधुर प्रकाश, श्री महावीर ठेकेदार, श्री रामचन्द्र ठेकेदार, श्री वैद्य सत्यप्रकाश आर्य, श्री बलवीर सिंह शास्त्री, श्री दयानन्द शास्त्री, श्री धर्मवीर कुण्डू, डॉ. दलबीर आचार्य आदि गणमान्य अतिथि सम्मिलित हुए।

यज्ञ की व्यवस्था में अपना सक्रिय योगदान देने के लिए कुमारी रीमा आर्या, कुमारी पूजा आर्या, कु. राजकुमारी आर्या, कु. निशा आर्या, कु. एकता आर्या, कु. इन्दू आर्या, कु. मुकेश आर्या, कु. मोनिका आर्या, कु. प्रीति आर्या, कु. सुषमा आर्या, कु. शशि आर्या आदि ने पूरा समय यज्ञ में लगाया। उनके अतिरिक्त कु. रिंकू, कु. विकास, कु. सुमन, कु. किरण आर्या, कु. सोनिया आर्या आदि ने भी यज्ञ के कार्य में हाथ बंटाया।

सर्वश्री रामपाल शास्त्री, ब्र. रामफल आर्य, परिषद् के प्रान्तीय मंत्री ऋषिराज शास्त्री, ब्र. धर्मदेव आर्य, ब्र. अखिलेश, अजयपाल आर्य, श्रीपाल आर्य एवं सोनू आर्य, सुनील कुण्डू, सुभाष कुण्डू, पाणिनी आर्य, महेन्द्र कुण्डू, दलबीर आर्य, विकास आर्य, पवन आर्य, योगेश आर्य आदि का भी विशेष सहयोग रहा। श्री सीताराम एवं श्री विजय जी ने सुन्दर सस्वर वेद पाठ करके सभी यज्ञप्रेमी लोगों से वाहवाही लूटी। यज्ञ में सर्वश्री वीरेन्द्र शास्त्री, जिले सिंह आर्य, जिले सिंह कुण्डू, जयभगवान आर्य, डॉ. नारायण सिंह आर्य, रामफल, रामकुमार सिंह आर्य, डॉ. महावीर आर्य, किशन कुमार प्रजापति, विष्णुदत्त शर्मा, नरेश शर्मा, वीरेन्द्र शास्त्री, बलवान सिंह आर्य, राजेन्द्र सिंह, वीरेन्द्र आर्य आदि ने पूरा समय देकर यज्ञ को सफल बनाया।

यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, श्री सत्यमुनि वानप्रस्थ एवं श्री देवमुनि वानप्रस्थ ने संन्यास तथा ब्रह्मचारी राजकुमार चौहान ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा की प्रक्रिया स्वामी चन्द्रवेश जी के आचार्यत्व में स्वामी आर्यवेश जी ने सम्पन्न कराई। दीक्षा के उपरान्त श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री स्वामी नित्यानन्द, वानप्रस्थ सत्यमुनि स्वामी सत्यानन्द, वानप्रस्थ देवमुनि स्वामी वेदानन्द तथा ब्र. राजकुमार राजदेव बने। संन्यास की दीक्षाओं से समारोह का दृश्य अत्यन्त रोचक एवं प्रभाशाली बन गया।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश जी ने अपने प्रवचनों की श्रृंखला में प्रतिदिन अनेक विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने वेद मंत्रों की सरल एवं सुन्दर व्याख्या करके वैदिक दर्शन पर अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने कहा कि वेद सृष्टि का संविधान है तथा ईश्वरीय ज्ञान है। परमात्मा ने जब यह सृष्टि बनाई तो उसे चलाने के लिए वेद ज्ञान भी दिया।

इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में अत्यन्त श्रद्धा के साथ आहुति देकर संकल्प लेने वालों में 'टीम शिक्षा–दीक्षा' के सदस्यों सर्वश्री प्रिं. स्वीटी भारती, मनोज लाकड़ा, हरपाल आर्य, अंजीत पाल, पवन स्वामी, राकेश लोहारू, भूराराम, आदमपुर, रविन्द्र सिंह मलिक एवं सुमन मलिक, केवल सिंह जीन्द, सुमन मलिक गोहाना, अलका मदान, विवेकानन्द शास्त्री, राजेन्द्र, जगदीश, चन्द्रवती, भूपेश हुड्डा, रैनिका मलिक, सज्जन सिंह राठी, रमेश चन्द्र, डॉ. सुदर्शन पुनिया, प्रवीण भुसमानी, विनोद हुड्डा, वेद प्रकाश आर्य, जगवीर मलिक, किरण मलिक, बीना फौगाट, प्रिं. महेन्द्र सिंह, आनन्द सिंह, सरिता मलिक, संजीव आर्य, सुधीर आर्य, पालेराम, पं. रतन सिंह, पं. ओम प्रकाश, ध्रुव आर्य, श्रीमती किरण कौशल, सुलोचना, कमाण्डो रामेश्वर श्योराण, डॉ. कविता सिंह, अवनीश खोखर, धर्मेन्द्र खोखर, नरेन्द्र पहलवान, जगदीश आर्य, मा. रामेश्वर आर्य, यज्ञवीर आर्य, कर्मवीर आर्य खरकड़ा, डॉ. शीशराम आर्य महम, नफे सिंह एवं डॉ. राजेश फरमाणा, राजवीर आर्य

शेष पृष्ठ 7 पर

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में विशेष सहयोगियों को सम्मानित करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व अन्य अधिकारीगण

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की चित्रमय झलकियाँ

बलिदान दिवस 23 मार्च पर विशेष

देशभक्ति ही जिनकी इबादत थी – भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव

– मनोज जैन

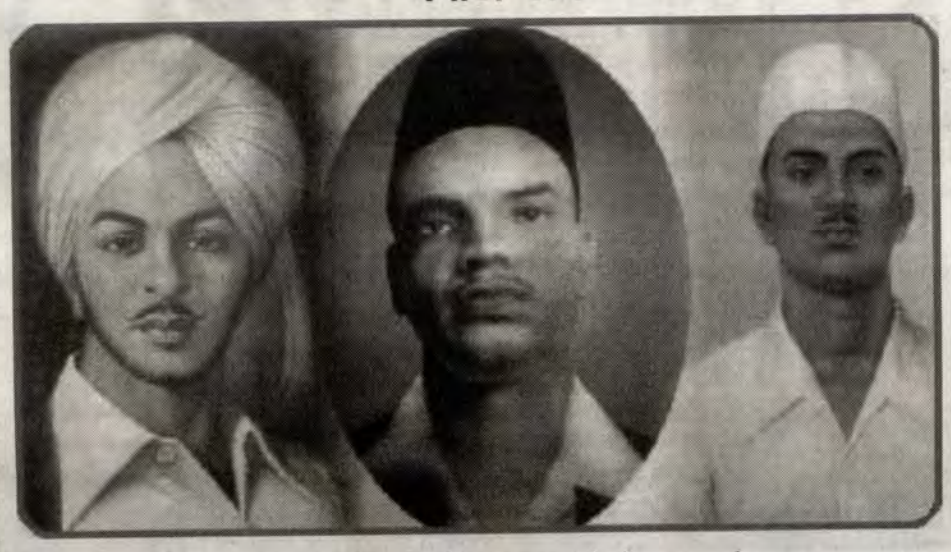

23 मार्च, 1931 का वो काला दिन जिस दिन भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव तीनों को रात के अंधेरे में फांसी दी गई। शाम 4 बजे सभी बैरकों के कैदी अपनी–अपनी कोठरियों में बंद हो गये, सबकी हाजिरी हो चुकी थी। इन तीनों वीरों को कोठरियों के अंदर ही स्नान कराया गया वैसे इन्हें तीन बजे दिन में ही फांसी लगने की सूचना दी जा चुकी थी। इसी जेल में एक सिख चीफ वार्डन था – चतर सिंह जो सेना का भूतपूर्व हवलदार था। वह एक धार्मिक स्वभाव का तथा मधुरभाषी सिख था। जब चतर सिंह को यह ज्ञात हुआ कि भगत सिंह को फांसी दी जाने वाली है, तो वह शीघ्र भगत सिंह के पास पहुँचा और बोला , "बेटा! अब तो आखिरी वक्त आ पहुँचा है मैं तुम्हारे बाप के बराबर हूँ। मेरी एक बात मान लो.....।'

परमात्मा को याद नहीं करूँगा

'कहिए, क्या हुक्म है?' उसी मस्ती से हंसते हुए भगत सिंह ने पूछा। मेरी सिर्फ एक दरख्वास्त है कि आप इस आखिरी वक्त में वाहेगुरु का नाम ले लो और गुरुवाणी का पाठ करो। यह लो गुटका, तुम्हारे लिए लाया हूँ। चतर सिंह बोला। भगत सिंह ठहाका लगाकर हंसे और बोले, आप की इच्छा पूरी करने में तो मुझे कोई एतराज नहीं हो सकता था, अगर आप कुछ समय पहले कहते। अब जबकि आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ, तो वह कहेगा कि यह (भगतसिंह) बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद किया नहीं अब मौत सामने आने लगी तो मुझ याद करने लगा है। इसलिए बेहतर होगा कि जिस तरह मैंने पहले जिन्दगी गुजारी है, उसी तरह मुझे इस दुनिया से जाने दीजिए। मुझ पर यह इल्जाम तो कई लगायेंगे कि मैं नास्तिक था और मैंने परमात्मा पर विश्वास नहीं किया, लेकिन यह तो कोई नहीं कहेगा कि भगतसिंह बुजदिल और बेईमान भी था, आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर उसके पांव लड़खड़ाने लगे थे।'

फांसी का आदेश

इस समय वह लिंकन का जीवन चरित्र पढ़ने में तल्लीन थे, तभी जेल के अधिकारी आ गये और बोले, सरदार जी फांसी का आदेश आ गया है, आप तैयार हो जायें, उनकी नजर किताब पर से नहीं हटी पढ़ते–पढ़ते वह बोले, "रुको! एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।" थोड़ी देर तक किताब के उस भाग को पढ़ लेने पर उन्होंने किताब उछाल दी और बोले 'चलो' और वह कोठरी से बाहर आ गये।

काले कपड़े

फांसी के तख्ते की ओर ले जाने से पहले, जेल के अधिकारियों द्वारा इन तीनों वीरों, भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव से, जेल के नियमों के अनुसार, काले कपड़े पहनने को कहा गया, लेकिन भगतसिंह इसके लिए राजी न हुए और उन्होंने कहा, "मैं चोर, लुटेरा, डाकू, खूनी या कोई मामूली अपराधी नहीं हूँ।' इस पर चीफ वार्डन तथा उप अधीक्षक की कुछ भी कहने की हिम्मत न हुई, अतः उन्होंने इस मामले में दरोगा अकबर खाँ से बात की। दरोगा अकबर खाँ उनके पास आया उसने उनसे मिन्नत की कि वे जीवन के अन्तिम समय में इस प्रकार का व्यवहार न करे तब भगतसिंह मान गये।

उनके चेहरे खिले हुए थे

तीनों क्रांतिकारी कोठरी से बाहर निकले। उन्होंने एक–दूसरे को देखा, तीनों आपस में गले मिले। तीनों हंस रहे थे, उनके चेहरे खिले हुए थे, गम का कोई भी निशान उनके चेहरों पर न था, वे सीना फुलाये हुए अकड़कर, मस्ती से झूमते हुए चल रहे थे, परन्तु जेल के उन अधिकारियों के चेहरों पर मुर्दानी जैसी छाई हुई थी। जो उन्हें ले जा रहे थे, उनके चेहरों पर दुःख और अवसाद की रेखाएँ साफ दिखाई दे रही थी। भगतसिंह बीच में थे और राजगुरु दाहिनी ओर थे तथा सुखदेव बाईं ओर। भगतसिंह की दोनों भुजाओं में अन्य दो साथियों की भुजाएं थी। तीनों ही मौत से एकदम बेखबर से लग रहे थे और झूम–झूमकर गा रहे थे –

दिल से निकलेगी न मरकर वतन की उल्फत।
मेरी मिट्टी से भी खुशबू–ए–वतन आयेगी।।

सारा माहौल गमगीन हो चला था, परन्तु इन देशभक्तों के चेहरों से एक विचित्र तेज चमक रहा था। तब भारत माता के ये लाड़ले सपूत, जेल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से घिरे हुए, बढ़ चले महाप्रयाण की ओर फांसी के फंदे को गले लगाने।

हथकड़ी नहीं लगाई गई

शाम 6.35 मिनट पर ये तीनों, फांसी दिये जाने वालीं जगह पर पहुंच गये। उस समय जेल अधीक्षक, आई. जी. पुलिस, डिप्टी कमिश्नर लाहौर तथा आई. जी. जेल भी वहाँ उपस्थित थे। तीनों वीर बुलंद आवाज में नारे लगाने लगे – इंकलाब जिन्दाबाद,' अंग्रेजी साम्राज्यवाद का नाश हो, राष्ट्रीय झंडा ऊँचा रहे, ऊँचा रहे, डाउन–डाउन यूनियन जैक। इन नारों को जेल के अन्य कैदियों ने भी सुना, तब उन्होंने अनुमान लगाया कि इन महान क्रांतिकारियों की महाप्रयाण वेला आ गई है, अतः अपनी–अपनी कोठरियों से ही ऊँची–ऊँची आवाजों में इन नारों को दोहराकर ही उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। जब तीनों फांसी के तख्ते के पास पहुँचे, तो फांसी के नियमों के अनुसार डिप्टी कमिश्नर वहां पर खड़ा था। भगतसिंह तथा उनके साथियों को हथकड़ी नहीं लगाई थी, क्योंकि जेलर ने उन्हें पहले ही कह दिया था कि उन्हें हथकड़ी नहीं लगाई जाये तथा मुँह पर काला कंटोप न चढ़ाया जाये। जेलर इनकी अंतिम इच्छा को मान गया था, किन्तु इस समय उन्हें देखकर डिप्टी कमिश्नर यकायक सहम गया, तब जेलर मोहम्मद अकबर ने उन्हें सारी बात बताई और विश्वास दिलाया कि वे कुछ नहीं करेंगे। फांसी के तख्ते पर चढ़ने से पहले भगतसिंह ने अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर को सम्बोधित करते हुए कहा, मजिस्ट्रेट। तुम भागयशाली हो, जो तुम्हें आज यह देखने का अवसर मिला है कि भारतीय क्रांतिकारी किस तरह प्रसन्नता से अपने सर्वोच्च आदर्शों के लिए मौत को भी गले लगा सकते हैं।

आदर्श पर अडिग भगतसिंह

निःसंदेह जीवन के अंतिम क्षणों में भी इस प्रकार के आदर्श पर अडिग रहने वाले भगत सिंह की बात को सुनकर, मजिस्ट्रेट प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका होगा। मजिस्ट्रेट से इतना कहने के बाद, वह फांसी के तख्ते पर चढ़ गये। तीन फंदे टंगे हुए थे। यहां भी तीनों उसी क्रम से बीच में भगतसिंह दाहिनी ओर राजगुरु तथा बाईं ओर सुखदेव खड़े हो गये। तीनों ने फिर गरजती आवाज में नारे लगाये – इंकलाब जिन्दाबाद साम्राज्यवाद मुर्दाबाद तीनों ने फंदे की ओर देखा, मुस्कराये, उसे चूमा और गले में डाल लिया, जैसे रणभूमि में जाने के लिए फूलों की माला डाल रहे हों। भगत सिंह ने जल्लाद से फंदों को ठीक कर लेने को कहा। शायद उसने यह शब्द अपने जीवन में पहली बार सुने थे। साधारण अपराधियों के तो तख्ते पर चढ़ने में ही पैर लड़खड़ाने लगते हैं, परन्तु भगत सिंह फंदा ठीक करने को कह रहे थे। जल्लाद ने फंदे ठीक किये। चर्खी घुमाई। तख्ता हटा और ये तीनों वीर मातृभूमि की बलिवेदी पर शहीद हो गये। भारत भूमि की आजादी के लिए एक चमकता हुआ सूर्य सदा–सदा के लिए अस्त हो गया।

रात में फांसी

सरकारी तार के अनुसार यह फांसी शाम 7 बजे दी जानी थी। श्री मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है कि यह फांसी 7.15 मिनट पर दी गई। कुछ दूसरी पुस्तकों में यह समय 7.30 बजे अथवा 7.33 मिनट लिखा है। यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि सामान्य तौर पर फांसी सुबह दी जाती है, जबकि भगत सिंह के मामले में इस नियम का पालन नहीं किया। उन्हें रात में फांसी दी गई। फांसी के बाद व्यक्ति का मृत शरीर उसके घरवालों को सौंप दिया जाता है, किन्तु इन महान क्रांतिकारियों के घर इस बात की सूचना भी नहीं दी गई कि उन्हें फांसी दी जा रही है। इससे अधिक जालिमाना हरकत और क्या हो सकती है?

दीवारों पर पोस्टर

अंग्रेज सरकार ने अपनी ओर से दूसरी सुबह केवल एक औपचारिकता पूरी करने के लिए जनता के लिए यह सूचना दी। लाहौर के जिलाधीश की ओर से दीवारों पर 24 मार्च को निम्नलिखित पोस्टर चिपकाये गये, जनता को सूचना दी जाती है कि भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव के शव, जिन्हें कल 23 मार्च को शाम के समय फांसी दी गई थी, जेल के बाहर सतलुज के तट पर ले जाये गये और वहां सिखों तथा हिन्दुओं के रीति–रिवाजों के अनुसार उनका दाह संस्कार कर दिया गया और उनकी अस्थियों को नदी में डाल दिया गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में

आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई में

वेदों में शिक्षा विज्ञान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक : 23 से 25 मार्च, 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 23 से 25 मार्च, 2018 को स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली) की अध्यक्षता में आर्य समाज सांताक्रुज, विट्ठलभाई पटेल रोड, सान्ताक्रुज (पश्चिम), मुम्बई में 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' के विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली) एवं स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल आमसेना) विशेष अतिथि रहेंगे।

इस संगोष्ठी में गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्या तथा गुरुकुलों के प्रतिष्ठित स्नातक, गुरुकुलों की वर्तमान समय में उपयोगिता तथा एकरूपता, आर्ष पाठ विधि की महत्ता, इसमें उपस्थित बाधाएँ, गुरुकुलों के स्थान पर अन्य शिक्षा प्रणाली का प्रचलन, आर्य समाज के लिए हितकारी या अहितकारी, अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूत्र आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई,
डी–309, मिल्टन अपार्टमेंट, जुहू कोलीवाड़ा, मुम्बई, मो.:– 9869668130

पृष्ठ–3 का शेष

अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है माँ

– बहन पूनम आर्या

बेटियाँ नारे बदलने से नहीं, मानसिकता बदलने से बचेंगी

– बहन प्रवेश आर्या

समाज के निर्माण में शिक्षक की अहम भूमिका है

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

मोखरा, जितेन्द्र आर्य एवं कविता आर्या, मा. अशोक आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने आहुतियाँ अर्पित की।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के यजमान बनने का यश प्राप्त करने वालों में श्री बबरूभान अहलावत एवं श्रीमती सुषमा रानी, मा. यशवन्त देशवाल एवं श्रीमती उर्मिला देवी, प्रिं. महेन्द्र सिंह शास्त्री एवं श्रीमती कृष्णा देवी, श्री जगवीर सिंह मलिक एवं श्रीमती किरन मलिक, श्री महावीर शास्त्री, डॉ. बलवीर शास्त्री, श्री विनोद कुण्डू एवं श्रीमती नीलम कुण्डू, मा. रमेश कुण्डू एवं श्रीमती नीलम कुण्डू, श्री राजकुमार हुड्डा एवं श्रीमती सुमन हुड्डा, श्री वीरपाल देशवाल एवं श्रीमती उर्मिला देशवाल, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, श्री अर्जुन सिंह एवं श्रीमती शकुन्तला देवी, मा. प्रदीप कुमार एवं श्रीमती प्रभा देवी, डॉ. प्रविन्द्र एवं श्रीमती सुमन देवी, श्रीमती कविता सिंह, श्रीमती बबीता सिंह, श्री अजय कुमार एवं श्रीमती प्रतिभा देवी, श्री अजय धूमानिया एवं श्रीमती विनिता धूमानिया, श्रीमती ओमपति देवी, श्री जितेन्द्र सिंह एवं श्रीमती सविता देवी, श्री अजीत पाल, मा. अशोक आर्य, मा. सज्जन राठी, बाबूलाल आर्य एवं श्रीमती बीरमती देवी, श्री हरपाल आर्य, श्री धर्मदेव आर्य एवं श्रीमती सविता खरकड़ा, श्री सोमवीर एवं श्रीमती सुनीता, श्री आशीष काजल एवं श्रीमती मंजू काजल, श्री रविन्द्र कुमार एवं श्रीमती रेणू देवी, मा. अजीत मलिक प्रमुख रहे।

उपरोक्त प्रेरणादाई एवं प्रभावशाली आयोजन में मिशन आर्यावर्त के निदेशक एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या के अथक परिश्रम एवं प्रयासों से यह कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में सैकड़ों नये परिवारों ने यजमान बनकर आहुतियाँ प्रदान की तथा हजारों लोगों ने सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध संकल्प लिया। विदित हो कि स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली, आर्य समाज का एक मजबूत प्रचार केन्द्र के रूप में विकसित होता जा रहा है। वर्ष में कई महत्त्वपूर्ण एवं विशाल आयोजन इस केन्द्र के माध्यम से आयोजित किये जाते हैं। पूरे कार्यक्रम की वीडियो रिकार्डिंग व फोटोग्राफी बेटी बचाओ अभियान की सक्रिय सदस्या मुकेश आर्या व इन्दू आर्या ने की।

10, 11 मार्च, 2018 को विद्यापीठ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य जगत् की विदुषी भजनोपदेशिका कल्याणी आर्या के प्रभावशाली कार्यक्रमों से समारोह की गरिमा को चार–चांद लग गये। कल्याणी आर्या की प्रस्तुति एवं व्याख्या अत्यन्त प्रभाशाली होती है एवं श्रोता उसे सुनकर मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। उनके अतिरिक्त ब्र. मुकेश आर्य गुरुकुल गौतमनगर, अजीत सिंह, स्वामी आत्मानन्द अलीगढ़ एवं स्वामी धर्मानन्द मथुरा ने भी गीतों का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। बहन मूर्ति देवी आर्या, मा. नफे सिंह, श्री धर्मवीर आर्य, सेठ जगदीश प्रसाद आर्य, श्री आशीष चौधरी एवं श्री विपीन तोमर का भी विशेष योगदान रहा। महायज्ञ के लिए सर्वश्री ठेकेदार महावीर सिंह टिटौली, श्री रामकिशन जिन्दल एवं समस्त जिन्दल परिवार दिल्ली, श्री बीरपाल देशवाल लाढ़ौत, डॉ. रणवीर सिंह खासा, बहन लक्ष्मी आर्या न्यूयार्क, श्री मनमोहन गोयल, श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री अरविन्द मेहता आदि का आर्थिक सहयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस विशाल कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में जिन संस्थाओं ने विशेष सहयोग प्रदान किया उनमें गुरुकुल सिंहपुरा, सुन्दरपुर, रोहतक, वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक, संन्यास आश्रम गाजियाबाद, आर्य समाज मोखरा, आर्य समाज फरमाना, रामचन्द्र अखाड़ा सुण्डाना, आर्य समाज अहुलाना, आर्य समाज खरकड़ा, गुरुकुल लाढ़ौत, रोहतक, आर्य समाज टिटौली, माता भीमेश्वरी देवी ट्रस्ट बेरी, शहीद भगत सिंह युवा परिषद् खटकड़, वैदिक सत्संग मण्डल, झज्जर तथा कार्यक्रम अधिकारी रोहतक प्रमुख रहे।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ को समाज की ज्वलन्त समस्याओं एवं कुरीतियों को मिटाने हेतु संकल्प के साथ किया जाये तो और भी अधिक लाभ हो सकता है तथा समाज में परिवर्तन आ सकता है। यह शिक्षा इस महायज्ञ से ली जानी चाहिए।

आश्रम के लिए दान में दी गई गाय

प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य श्री सत्यप्रकाश आर्य ने अपने छोटे पुत्र की शादी के उपलक्ष्य में आश्रम के लिए शाहीवाल एवं राठी नस्ल की दो दुधारू गाय दान देकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। वैद्य सत्यप्रकाश जी स्वयं अपने घर से गायों को लेकर आये तथा स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी चन्द्रवेश जी को दोनों गायों को सौंप दिया। वैद्य सत्यप्रकाश आर्य ने विद्यापीठ में बन रही विशाल लाइब्रेरी के लिए भी एक लाख रुपये दान देने की घोषणा की।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की विशेष चित्रमय झलकियाँ

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।